अजोला :– कम पानी मे पशुओ का पौष्टिक हरा चारा

भारत विश्व मे सबसे बडा पशुधन आबादी वाला देश है। देश में बढती मानव जनसंख्या,शहरीकरण एवं औघोगिकीकरण के कारण वन एवं चारागाहों के क्षेत्रफल मे कमी आ रही है जिसका प्रतिकुल प्रभाव पशुओं के विकास एवं उत्पादन हो रहा है। व"र् के अधिकांश समय सभी क्षेत्रो मे हरे चारे की कमी रहती है जिसके कारण किसान अपने पशुओ को हरा चारा नहीं दे पाता है इसके चलते पशुओ मे तेजी से बढती कुपो"ाण की समस्या के कारण आज हमारे यहां प्रति पशु प्रतिदिन का दूध उत्पादन बहुत कम है। ऐसी परिस्थिति मे हरे चारे की खोज एक विस्मयकारी पौधे फर्न अजोला पर समाप्त होती है जिसमे पशुओं के लिए सदाबहार पौष्टिक आहार प्रदान करने की क्षमताऐं विद्यमान है। अजोला जल की सतह पर तैरने वाला एक फर्न है जिसकी पत्तियों पर परस्पर रूप से निर्भर नीलहरित 'ौवाल पाया जाता है जो वातावरण के नन्नजन का उपयोग कर पौष्टिक आहार प्रोटिन बनाने मे सहायक होता है।

अजोला उत्पादन का महत्व :–

* अजोला मे प्रचुर मात्रा मे प्रोटीन (35–40%) के अलावा आवश्यक अमीनो एसिड(7–8%) विटामिन (विटामिन ए, विटामिन बी –12 तथा बीटा–कैरोटिन), खनिज लवण(10–15%) जैसे कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, कॉपर, पोटेशियम, मैग्नेशियम एवं जैव सक्रिय पदार्थ एवं पॉलीमर्स आदि पाये जाते है।
* अजोला मे कार्बोहाइड्रेट एवं वसा की मात्रा बहुत कम होती ह अतः इसकी संरचना इसे अधिक पौ"टक एवं आदर्श पशु आहार बनाती है और इसे पशु आसानी से पचा सकते है।
* अजोला की पशुओं के आहार मे 'ाामिल करने से दाने मे लगने वाली लागत को कम किया जा सकता है और अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
* पशुओं को उनके दनिक आहार के साथ डेढ से दो किलोग्राम अजोला प्रतिदिन की दर से दिया जाता है तो दूध उत्पादन मे 15–20 प्रतिशत की वृद्धि होती है।
* अजोला गाय, भैंस , भेड ,बकरियों , मुर्गियों , सुकर, खरगोश के आहार के लिए एक आदर्श चारा सिद्ध हो रहा है।

अजोला उत्पादन की विधि :–

* एक छायादार जगह मे 2 मीटर लंबा, 2 मीटर चौडा तथा एक फीट गहरा गड्ढा खोदना है।
* इस गड्ढे को पराबैंगनी किरण रोधी प्लास्टिक सीट से ढंक देना है। सीमंट की टंकी मे भी अजोला को उगाया जा सकता है ऐसी परिस्थिति मे प्लास्टिक सीट बिछाना आवश्यक नहीं है।
* लगभग 10–15 किलोग्राम मिट्टी गड्ढे मे फैलाना है।
* 2 किलोग्राम गोबर एवं 30 ग्राम सुपर फॉस्फेट को 10 लीटर पानी मे घोल बनाकर गड्ढे मे डालना है और पानी का स्तर 10 सेमी तक रखना है।
* 500 ग्राम से 1 किलोग्राम तक अजोला कल्चर गड्ढे के पानी मे डाल देना है।
* अजोला बहुत तेजी से विकसित होता है और 10–15 दिन के अंदर पूरे गड्ढे मे फैल जाता है इसके बाद 800–1200 ग्राम अजोला प्रतिदिन बाहर निकाला जा सकता है।
* प्रत्येक पांच दिन मे एक बार 20 ग्राम सुपरफॉस्फेट और लगभग 1 किलोग्राम गोबर गड्ढे मे डालने से अजोला तेजी से विकसित होता है।

सावधानियाँ :–

* अजोला उत्पादन छायादार जगह जैसे पेड की छांव या 'ोड नेट के नीचे करना चाहिए ताकि वातावरण तापमान 25–30^{0}ब बना रहे।
* अजोला को सघनता से बचाने के लिए दो से तीन दिन के अंतराल मे निकालना चाहिए।
* प्रत्येक छः माह मे गड्ढे का पानी एवं मिट्टी बदल कर अजोला कल्चर डालना चाहिए।
* अजोला मे गोबर की गंध से छुटकारा पाने के लिए पशुओं को खिलाने के पहले साफ पानी से धोना चाहिए।